NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

25 - 26 Feb
2023
नारायण
दिव्यांग
विवाह
दिव्याँग सशक्तिकरण उत्सव

102 परिवारों में शहनाई का सपना साकार

नि:शुल्क दिव्यांग एवं निर्धन सामूहिक विवाह समारोह

दिनांक : 25-26 फरवरी, 2023 | स्थान : सेवा महातीर्थ बड़ी, उदयपुर

शुभकामनाएं

आप सब के अथक प्रयासों व सहयोग से दिनांक 25-26 फरवरी को उदयपुर में आयोजित हो रहे 39वें दिव्यांग एवं निर्धन सामूहिक विवाह का इंतजार खत्म होने वाला है..... इस विवाह में शामिल होकर वैवाहिक जीवन की शुरूआत करने वाले सभी 51 जोड़ों को अग्रिम मेरी और संस्थान परिवार की ओर से अनन्त शुभकामनाएं.... साथ ही संस्थान के अब तक 38 विवाह आयोजनों में संतान के साथ सुखमय जीवन जी रहे 2201 दम्पतियों को भी खूब बधाई।

ममता-दिनेश के आंगन में बेटी बिखेर रही खुशियाँ

सेमारी (खेरवाड़ा) निवासी दोनों पांवों से असक्षम ममता के पांवों का सफल ऑपरेशन 5 साल पहले संस्थान में हुआ। जिसके बाद संस्थान के सामूहिक विवाह में दिव्यांग दिनेश के संग फेरे लेकर वैवाहिक जीवन शुरू किया था। दोनों की शादी के करीब 4 साल पूर्ण हो चुके हैं। 3 साल की एक बेटी इनके आंगन में खुशियाँ बिखेर रही है। दिव्यांग दिनेश एक प्राइवेट स्कूल में टीचर है तो ममता गृहिणी। संस्थान ने ममता को कम्प्यूटर कोर्स करवाकर उन्हें हुनरमंद बनाने की दिशा में कदम बढ़ाया है। उम्मीद है कि ममता और दिनेश के सामाजिक और आर्थिक रूप से सक्षम होने से इनकी बेटी का खुशमय भविष्य बन सकेगा।

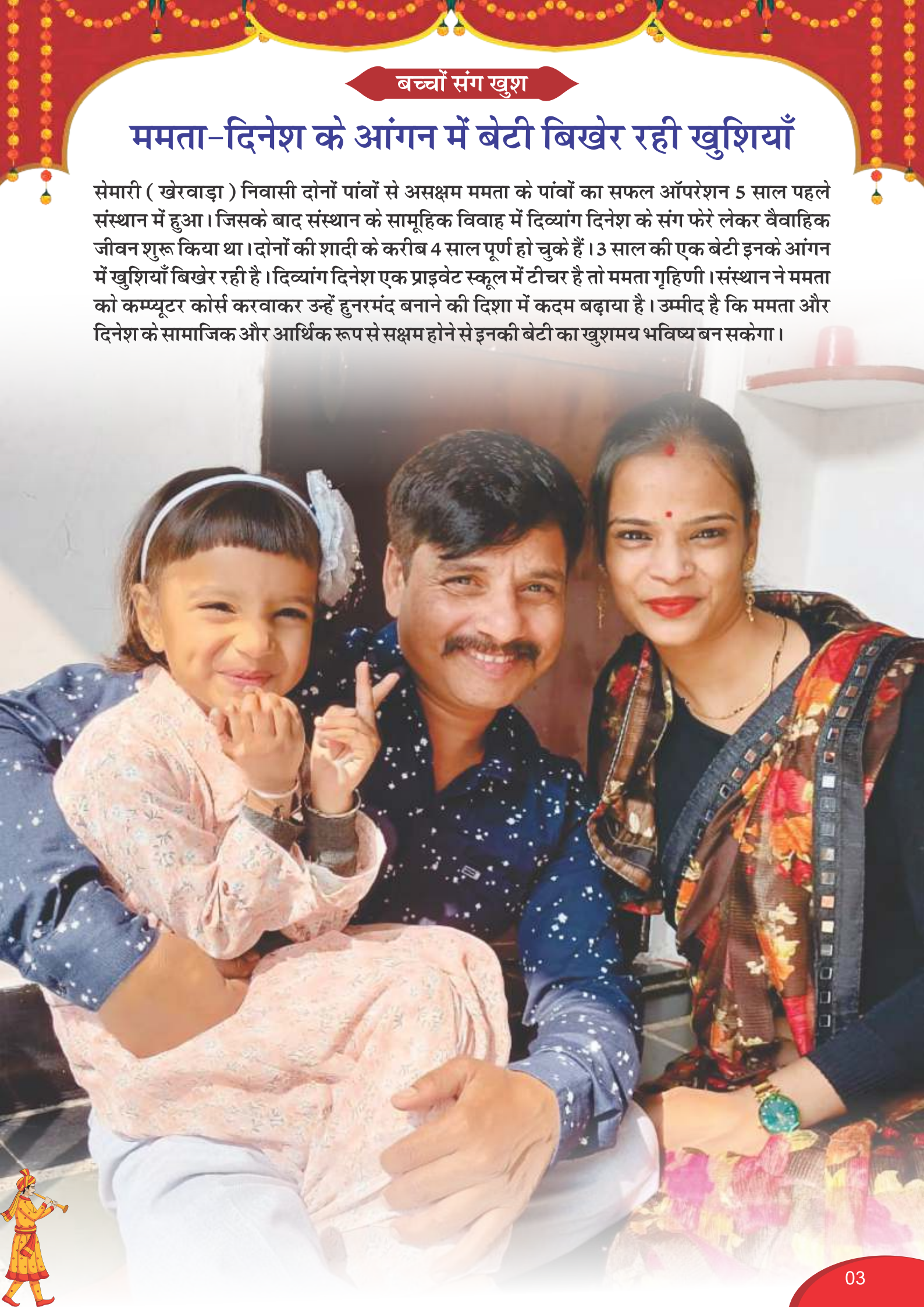

संस्थान के आशीर्वाद से ऑटो का व्यापार

जालोर निवासी मान कंवर और कोटड़ा (जुड़ा गांव) के मनोहर सिंह दोनों दिव्यांग थे। संस्थान में उपचार करवाने आए, दोनों के सफल ऑपरेशन के बाद रोजगार से जुड़ाव हेतु मान कंवर ने संस्थान द्वारा संचालित नि:शुल्क कंप्यूटर कोर्स किया। इसी दौरान दोनों की मुलाकात हुई। यह मुलाकात इतनी गहरी हो गई की दोनों ने जीवनभर साथ रहने का फैसला कर लिया। रोज साथ में बैठना, साथ खाना खाना और घण्टों बातें करना चलता रहा। दिल्ली के रामलीला मैदान में 2014 के नि:शुल्क सामूहिक विवाह में जनम-जनम के साथी बने।

मान कंवर गृहस्थी संभालती है तो वहीं मनोहर ऑटो चला कर घर गृहस्थी चला रहे है। शादी के बाद ऑटो चलने का फैसला सही साबित हुआ। मनोहर ने अपनी मेहनत से 1 के 3 ऑटो खड़े कर अपना व्यापर बढ़ा दिया। इनके 7 वर्ष की लड़की है जो नजदीक के प्राइवेट स्कूल में पढ़ाई कर रही है। तीनों अपना जीवन खुशी-खुशी जी रहे हैं।

बच्चा जा रहा स्कूल, बच्ची कर रही तैयारी

उदयपुर जिले की आदिवासी बहुल खेरवाड़ा तहसील के नवाधरा की 34 वर्षीय मरियम भगोरा व उदयपुर जिले की ही झाड़ोल तहसील के सोम गांव के मदन सागिया के साथ अपनी गृहस्थी के साथ खुश है। संस्थान द्वारा आयोजित सन 2016 के सामूहिक विवाह में ये दो शरीर एक प्राण हुए थे। दोनों ही पांवों से दिव्यांग हैं और इनकी सुधारात्मक सर्जरी भी संस्थान में हुई। यहीं इनकी पहचान हुई और जीवन साथी बनने का निश्चय किया। मरियम गृहस्थी संम्भालती है तो मदन भाई संस्थान में अपने ऑपरेशन के बाद प्राप्त प्रशिक्षण से सिलाई का काम कर घर बैठे रोजगार के माध्यम से एक सामान्य गृहस्थी की सभी जरुरतों को पूरा कर लेते हैं। इनका 6 वर्ष का लड़का नजदीक के स्कूल में जा रहा है, जबकि मरियम तीन वर्ष की बच्ची को अगले वर्ष नर्सरी क्लास में प्रवेश की प्रारंभिक तैयारी करवा रही हैं।

दोनों बताते हैं कि शुरूआती दौर से हमारी जिन्दगी बहुत ही चुनौतियों भरी रही ना खेल पाए ना स्कूल जा पाए। लोगों के ताने सुन कर हमारे ऊपर क्या बिती यह हम ही जानते हैं परन्तु संस्थान ने हमें जो यह नई जिन्दगी दी इसके बाद से ही हमने जीना शुरू किया और आज हम सब बेहद खुश हैं।

खुद की दुकान और बेटी की बेहतर परवरिश

उमेश विश्वकर्मा और कंचन दाड़गे दोनों ही दिव्यांग हैं। दोनों के ऑपरेशन संस्थान में हुए। कानपुर (उप्र) के बिल्होर निवासी उमेश बचपन से ही एक पांव से पोलियो ग्रस्त थे। घुटनों पर एक हाथ रखकर चलना इनकी नियती थी। जब कि कंचन महाराष्ट्र के जलगांव की रहने वाली हैं। इनके एक पांव का पंजा मुड़ा हुआ था। इन दोनों के ऑपरेशन संस्थान में हुए इसी दौरान इनकी मुलाकात हुई। जो प्यार में बदल कर शादी के मुकाम तक पहुंची। यही ऑपरेशन के बाद उमेश ने मोबाइल सुधार का प्रशिक्षण भी लिया। वर्ष 2016 में आयोजित नि:शुल्क सामूहिक विवाह में ये परिणय सूत्र में बंध गए। पांच वर्ष की एक लड़की के साथ इनकी गृहस्थी खुशहाल है। मोबाइल सुधार के साथ घर के निकट ही अपना किराणा स्टोर चलाकर उमेश जीवन संगिनी व बच्ची के साथ बेहद प्रसन्न हैं।

फोन से सात फेरों तक पहुंची बात

यह कहानी है सिमलवाड़ा निवासी रमेश की जो जन्म से दांई आँख से दिव्यांग है। जोधपुर के अंध महाविद्यालय से पढ़ाई कर रहा है। वहीं आसपुर की रहने वाली कल्पना निर्धन परिवार से है। पिता 4 भाई -बहिनों सहित 6 सदस्यों का गुजारा अपनी छोटी सी खेती से कर रहे हैं। दोस्त ने कल्पना के फोन नम्बर दिए और बात करवाई। इस फोन कॉल से ही दोनों के बीच प्रेम कहानी की बुनावट शुरू हुई, बातों का सिलसिला धीरे-धीरे चलता रहा और एक होने की सोच अपने घर वालों से विवाह के लिए सहमति जताई, पर दोनों परिवारों की आर्थिक स्थिति ऐसी नही थी कि शादी करा पाएं। क्योंकि एक समय का भोजन जुटा पाना भी उनके लिए मुश्किल था। अब संस्थान के सहयोग से 26 फरवरी को विवाह कर नए जीवन में प्रवेश करेंगे।

कल्पना बताती है कि अब में इनकी आँखे बन जीवन के हर मोड़ पर साथ निभाऊंगी। रमेश बताते हैं कि मेरी पेंशन और पिता की काश्त से 7 सदस्यों का गुजारा चलता है। तो वहीं कल्पना के पिता दिहाड़ी मजदूर हैं। ऐसे में शादी के लिए इतने पैसे कहा से व कैसे लाएं?

इसी बीच संस्थान के साथी से सामूहिक विवाह की जानकारी मिली जो जीवन भर की खुशी दे गई।

मन की आंखों से देखेंगे जीवन के रंग

आंखों के बिना जीवन अधूरा और बेरंग है। रोज ठोकरें-खा खाकर जीते हैं। महेंद्र कुमार (साबला, डूंगरपुर) और कलावती आमलिया - महूड़ी की रहने वाली है। दोनों जन्म से ही नेत्रहीन हैं । स्कूल में थे तब दोनों का मिलन हुआ और तब से दोनों ने हम सफर बनने का वादा कर लिया । महेंद्र ने ब्रेललिपि से पढ़ाई कर रीट की परीक्षा पास कर ली है। वहीं कलावती भी आगे पढ़ने- बढ़ने का संकल्प ले चुकी है। मां के प्यार से महरूम बेटी को पिता शंकर ने दिन-रात मजदूरी कर पढ़ाया।

दोनों बताते हैं कि रिश्ता तो हो गया था परन्तु पैसों के अभाव में शादी नहीं हो पाई। फिर किसी ने घरवालों को बताया कि नारायण सेवा संस्थान नि:शक्तजनों का विवाह संस्थान में नि:शुल्क करवाते हैं तो पंजीयन करवाया। अब हमारी शादी होने जा रही है। हम आंखों से तो नहीं देख सकते पर मन की आंखों से देखेंगे जीवन के रंग।

हाथों में हाथ, चलेंगे साथ

39वें दिव्यांग विवाह में शामिल हो रहे रणजीत मीणा और सुमन वरहात दोनों जन्म से ही नेत्रहीन है। नेत्रज्योति के बिना जिंदगी वीरान सी है जिन्दगी दूसरों के सहारे की मोहताज रहती है।

रणजीत, बड़ला का और सुमन, खैरवाड़ा के पीथापुर की रहने वाली हैं। सुमन को 20 प्रतिशत ही दिखाई देता है। दोनों की स्थिति देख माता -पिता ने सगाई तो कर दी परन्तु अंधत्व और पैसों की तंगी होने से शादी नही हो पाई। नारायण सेवा संस्थान और उसके नि:शुल्क विवाह प्रकल्प के बारे में पहले सुन रखा था। संस्थान से सम्पर्क करने पर 25-26 फरवरी को विवाह के आयोजन की खुशखबरी मिली। घरवालों ने पंजीयन करवाया। अब दोनों संस्थान की मदद से अपना दाम्पत्य जीवन शुरू करने जा रहे हैं।

दोनों बताते हैं कि हम तो देख नहीं सकते परन्तु महसूस जरूर कर सकते हैं, आप हमारी शादी जरूर देखना।

सुरजा बनेंगी प्रेम का प्रकाश

प्रतापगढ़ के भोजपुर गांव में रहने वाली सुरजा पुत्री मानिया मीणा जन्म से पोलियो की शिकार थी। दोनों पैरों से जमीन पर घिसट -घिसट कर चलने को मजबूर थी। संस्थान में नि:शुल्क ऑपरेशन के बाद बैशाखी के सहारे चलने लगी। संस्थान ने नि:शुल्क सिलाई प्रशिक्षण दे आत्मनिर्भर बनाया अब अपने घर और आस-पड़ोस के लोगों के कपड़े सील गरीब माता-पिता की मदद कर रही हैं। लेकिन माता-पिता को अपनी गरीबी और बेटी की दिव्यांगता का दर्द सताए जा रहा था, की कौन इसका हाथ थामेगा ? लेकिन ईश्वर ने उनकी सुन ली। उदयपुर, लसाड़िया तहसील के प्रेमचंद्र पुत्र चौखा जो जन्म से ही नेत्रहीन हैं। पर जीवन मे कभी हार नहीं मानी। अपने हौसलों को बुलन्द कर चुनौतियों को मात दे जोधपुर के ब्लाइंड कॉलेज से बी.ए. तक की पढ़ाई पूरी की । निकट के रिश्तेदार ने दोनों की शारिरिक स्थिति को देखते हुए इनका मिलन करवाया। आपस में बात कर दोनों ने एक-दूजे का सहारा बनने का निर्णय लिया। प्रेमचंद्र कहते हैं कि मैं बनूंगा सुरजा की बैशाखी तो जवाब में सुरजा कहती हैं कि इनकी नेत्रज्योति बन जीवन के हर मोड़ पर साथ निभाऊंगी।

व्हाट्सएप ग्रुप से बनी प्यार की कहानी

बचपन से ही दिव्यांगता, पैसों की कमी, और स्कूल दूर होने से कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। परन्तु आगे बढ़ने की ललक और संकल्प से कभी हिम्मत नहीं हारी ।

सत्येंद्र कुमार भरतपुर और सुनिता कुमारी झारखंड की निवासी हैं। दोनों के परिवारों की आर्थिक स्थिति बेहद कमजोर है। दिव्यांगता के कारण दोनों का जीवन संघर्षपूर्ण रहा। एक लाठी तो दूसरा बैशाखी के सहारे जैसे -तैसे चल जीवन बिता रहे थे कि तीन माह पहले व्हाट्सएप ग्रुप से हुई मुलाकात जीवनभर साथ निभाने वाली साबित हुई, कुछ ही दिनों की बातचीत में दोनों ने जीवनभर साथ निभाने का फैसला कर लिया। सत्येंद्र 4 साल से परचूनी की दुकान चला गुजारा चला रहे हैं और सुनीता के पिता दिहाड़ी मजदूर हैं। निर्धन होने के कारण शादी करवाने में असमर्थ हैं। ऐसे में संस्थान के सामूहिक नि:शुल्क विवाह की मिली जानकारी से आस जगी। रजिस्ट्रेशन करवा अब 25-26 फरवरी को दोनों दिव्यांग एक-दूजे का सहारा बनने जा रहे हैं।

काली और शंकर बनेंगे जन्मों के साथी

सलूम्बर ,सारड़ा की रहने वाली काली कुमारी अपना जीवन पीठ की कूबड़ और पांव की परेशानियों के साथ अकेलेपन में गुजार रही थी। वो बताती है की एक दिन बहन के सुसराल जाते समय मेरी मुलाकात परसाद निवासी शंकर से हुई जिसे पोलियो होने से एक पांव छोटा है। लाठी के सहारे चल क्रेशिंग पर मजदूरी करता है। उसने अपनी कहानी बताई और मैंने अपनी। कुछ दिनों की बातों में हमने अपना घर बसने की सोची... दोनों ने माता-पिता से यह बात की पर उन्होंने अपनी घर की गरीबी हालत बताते हुए कहा हम कैसे कराएं तुम्हारी शादी... तब नारायण सेवा संस्थान के साथी से सम्पर्क किया। उन्होंने हमारा रजिस्ट्रेशन कर लिया। अब 25-26 फरवरी को शादी हो रही है..... हमारी शादी में पधारकर अपना आशीर्वाद प्रदान करें।

दिव्यांग रूपा बनेगी सकलांग दिनेश की संगिनी

कटनी के नया गांव (खेरवाड़ा) म.प्र. के दिनेश कुमार नामदेव का जीवन बहुत ही चुनौतिपूर्ण रहा। पिता पैरेलाइज और माता की कोरोना से मौत होने से अनाथ दिनेश टूट सा गया। फूड डिलीवरी व होटल में काम कर अपना गुजारा कर रहे थे कि 3 साल पहले पाली के सोहागपुर की रूपा रजक से हुई मुलाकात इनके सूने जीवन को रोशन करने वाली साबित हुई। रूपा 5 वर्ष से दांए पांव से दिव्यांग होते हुए भी कॉल सेंटर में काम कर घर मे माता-पिता को मदद कर रही है। दोनों की एक कॉल से हुई यह मुलाकात शादी तक आ गई। दोनों बताते हैं कि एक-दूसरे का सहारा बन के जीवन के हर मोड़ पर साथ निभाएंगे। परन्तु दिव्यांगता और गरीबी इनके सपने को आकार ले नहीं दे रही थी। अब संस्थान के 39वें नि:शुल्क निर्धन एवं दिव्यांग सामूहिक विवाह में इनका सपना पूरा होने जा रहा है।

कॉलेज की दोस्ती के सात फेरे

राहुल सिगरसी (उप्र) के रहने वाले हैं, 4 माह में पोलियो होने से दोनों पैरों से दिव्यांगता के शिकार होते हुए भी घर का गुजारा ई-मित्र चलाकर कर रहे हैं। वहीं उर्मिला मिर्जापुर जिले के सरसी गांव की है। दोनों शुरुआती दौर से ही दिव्यांग हैं । दोनों की प्रेम कहानी हर लिहाज से खूबसूरत है। 2014 में इनकी लखनऊ में पहली मुलाकात हुई। एक ही कॉलेज से पढ़ाई करने के दौरान दोस्ती हुई जो आगे चलकर प्यार में बदल गई। दोनों ने आगे का जीवन एक दूसरे के साथ बिताने का फैसला किया। अब संस्थान के सामूहिक विवाह में सात फेरे ले जिंदगी के हर पड़ाव पर एक दूसरे का साथ देंगे।

रेखा बनेंगी दिव्यांग अम्बालाल की जीवन रेखा

6 साल की उम्र से लकवाग्रस्त होने से सराड़ा निवासी अम्बालाल जमीन पर दांए हाथ-पांव से घिसट -घिसट कर चुनौतीपूर्ण जीवन बिताते हुए सोचता था कि कौन मुझसे शादी करेगा कैसे मैं अपने लम्बे जीवन की गाड़ी को आगे बढ़ा पाऊंगा। लेकिन हौसले की उड़ान ऊंची थी उसने पहाड़ सी तकलीफों के बावजूद बी.ए. तक पढ़ाई की। इसी बीच सकलांग रेखा (सिपुर सल्लाड़ा) जो निर्धन परिवार से है। माता-पिता ने दोनों की भेंट करवाई। दोनों की सहमति से अब दिव्यांग अम्बालाल की जीवन रेखा बनने जा रही है रेखा। उसके इस साहस को समाज का सलाम। उनके विवाह में बाधक कमजोर आर्थिक हालात को संस्थान ने हल कर दिया। संस्थान के सामूहिक विवाह ने उनका सपना सच कर दिया।

सरस्वती के होंगे पीले हाथ

गया (उप्र) जिले के लखनपुर में रहने वाले सुनील 5 वर्ष की उम्र से बाएं पैर में पोलियो से पीड़ित हैं और लाठी के सहारे ही चलते हैं। घर के खराब आर्थिक हालातों के चलते पढाई का सपना तो टूटा ही खाना भी बड़ी मुश्किल से मिल पाता है। बैंगलोर की एक प्लास्टिक फैक्ट्री में मजदूरी कर घर खर्च चलने में माता-पिता का सहयोग कर रहे हैं। इसी बीच एक साल पहले भाभी ने अपनी बहन सरस्वती से सगाई तो करवाई, लेकिन गरीबी के चलते पिता को यह चिंता खाये जा रही थी की बेटी की शादी कैसे होगी ? इसी दौरान उन्हें संस्थान द्वारा आयोजित दिव्यांग एवं निर्धन विवाह की जानकारी मिली। उन्होंने संस्थान से सम्पर्क किया। सम्बंधित साधक बंधु ने विवाह पंजीयन करवाया। पिता प्रसन्न हैं कि उनकी उम्मीद से कहीं ज्यादा ठाठ से बेटी के हाथ पीले होंगे।

अंधेरी जिन्दगी में साथी का संवेरा

मंदसौर के नारायणगढ़ की धापू पुत्री मोहन लाल एक कार एक्सीडेंट में लगी चोट से मानसिक रूप से कमजोर है। घर के गुजारे लायक आमदनी भी नहीं होने से पिता बेटी के विवाह को लेकर चिंतित थे। वहीं चित्तौड़गढ़, डूंगला निवासी कमलेश कुमार का जन्म से ही बांया हाथ मुड़ा हुआ था। गरीब पिता गिरजा शंकर व माता गंगा देवी बताते हैं कि इलाज के लिए सब तरफ भटके। फिर टीवी से नारायण सेवा संस्थान की जानकारी मिली। 10 साल की उम्र में हाथ का ऑपरेशन करवाने आये। हाथ तो ठीक हो गया पर बेटे की शादी के बारे में सोच परेशान रहते कि कौन शादी करेगा दिव्यांग से। दोनों के सूने जीवन को रोशन करने एक मित्र ने दोनों परिवारों का मिलन करा सगाई करवाई, पर निर्धनता के कारण विवाह सम्भव नही हो सका। लेकिन अब दोनों के विवाह का सपना साकार होने जा रहा है।

मूक बधिर गीता की आवाज बनेगा सुमेराराम

बाड़मेर जिले की समदड़ी तहसील के देवलियारी के सुमेराराम के दांए पैर को 3 वर्ष की उम्र में पोलियो ने जकड़ लिया। 2 वर्ष पूर्व संस्थान में इनका नि:शुल्क उपचार हुआ, उसके बाद बैशाखी के सहारे चलते हैं। रोजगार से जोड़ने के लिए संस्थान ने सिलाई प्रशिक्षण देकर इन्हें आत्मनिर्भर बनाया। उधर बूढ़े माता-पिता को चिंता सता रही थी कि कौन विकलांग को अपनी बेटी देगा? लेकिन बूढ़े माता-पिता की इस चिंता का भी भगवान ने निवारण किया। समदड़ी तहसील के गोदों का बाड़ा की 21 वर्षीय गीता पुत्री बाबुराम जो जन्म से ही बोल नही पाने के दर्द से संघर्ष पूर्ण जीवन व्यतीत कर रही है। रिश्तेदार ने मिलन कराया। दोनों ने एक-दूजे का सहारा बनाने की सोच सात फेरे लेने का निर्णय किया। अब संस्थान के सहयोग से दोनों जनम-जनम के साथी बनने जा रहें हैं।

दो प्रेमी जोड़े का मिलन

आदिवासी मूल के शंकर गरासिया 2 वर्ष की उम्र में पोलियो के शिकार होने से बांए पांव से चलने में असमर्थ है। आज किराणे की दूकान चला गुजरा कर रहे है। माता- पिता भी दिहाड़ी मजदूर हैं। देवर की ऐसी दशा देख भाभी सुमन ने अपनी बहन भंवरी का हाथ अपने देवर के हाथो में देने का विचार बनाया। भंवरी भी दांए पैर से दिव्यांग है। बेटी की शादी की जिम्मेदारी खेती कर घर चलने वाले पिता के हाथो में थी जिसे भाभी ने पूरा कर दिया। अपनी बहन के लिए सुमन को अपने देवर से अच्छा वर और कोई नहीं लगा क्योंकि दोनों दिव्यांग है और मानसिक तौर पर एक दूसरे को समझते हैं। अब दोनों संस्थान के सामूहिक विवाह में विवाह बंधन में बंधने जा रहे हैं।

दिव्यांग श्यामलाल की लाठी बनेंगी रेखा

श्यामलाल अयलपुर, (प्रतापगढ़) के रहने वाले हैं। 8 साल की उम्र में दोस्तों के साथ खेलते हुए दांए पैर में चोट लग गई इसके बाद नस के दबने से रक्तसंचार कम हो गया। 5 माह बाद धीरे-धीरे पैर पतला व कमजोर हो गया। बढ़ती उम्र को देख घरवालों ने हाथ में लाठी थमा दी। दिव्यांगता और निर्धनता के कारण पढ़ाई भी छोड़नी पड़ी। पिछले 25 सालों से लाठी के सहारे होटल में खाना बनाने का काम कर 5 भाई-बहिनों और माता-पिता का सहयोग कर रहा हैं। वहीं खानमीन काहिला फला (खेरवाड़ा) की रेखा कुमारी निर्धन परिवार से है। पिता की मौत ने परिवार के सारे सपनों को तोड़ दिया था। माता शारदा देवी खेती कर 5 बहिनों और एक भाई को पाल-पोस रही हैं।

दोस्त के बहिन की शादी में दोनों की पहली बार ऋषभदेव में मुलाकात हुई। कुछ महीने बाद बातों ही बातों में दोनों ने एक होने का फैसला कर लिया। असल में यह मुलाकात दो दिलों के जुड़ाव की थी। परन्तु दिव्यांगता और निर्धनता इनके सपनों को आकार लेने में बाधक थी। अब संस्थान की मदद से सामूहिक विवाह में श्याम की लाठी बनेंगी रेखा।

भुलकी की रोशनी बनेगा दिव्यांग विकास

प्रतापगढ़ के गामदा गांव निवासी विकास 5 साल की उम्र में पोलियो के चलते दांए पांव से दिव्यांग है। पिछले 22 सालों से लाठी के सहारे चल अपने लायक मिली मजदूरी कर परिवार की मदद कर रहा है। तो वहीं धरियावद की भुलकी कुमारी बचपन से ही बायीं आंख से कम दिखाई देने से भविष्य को लेकर परेशान है। निर्धनता के चलते मनरेगा में काम कर गरीब माता-पिता का हाथ बटा रही है। शारिरिक तौर से दोनों दिव्यांगों का माता-पिता ने रिश्ता तो पक्का कर दिया पर निर्धनता के कारण शादी का भारी-भरकम खर्च उठाना सम्भव नही था। घरवालों ने संस्थान से मदद की गुहार लगाई । अब संस्थान के सहयोग से दोनों दिव्यांग 39वें नि:शुल्क सामूहिक विवाह 26 फरवरी को परिणय सूत्र में बंधेंगे।

सूनी जिंदगी में खुशी के रंग

दोनों ही पोलियो ग्रस्त होने से चलने -फिरने में असमर्थ थे। प्रमोद कुमार (बोध गया, बिहार) 2 साल की उम्र से दांए पैर और ममता (चतरा हण्टर गंज,झारखंड) भी दांए पांव से दिव्यांग है। दोनों दिव्यांगता के चलते संघर्षपूर्ण जिंदगी बिता रहे थे। प्रमोद दिव्यांगों के लिए काम कर रही एक संस्थान में फील्ड वर्कर है। इसी दौरान संस्थान के कार्य से झारखंड गया तब ममता के मौसी-मौसा से मुलाकात हुई। यह मुलाकात दोंनों दिव्यांगों के सूनी जिंदगी में खुशी के रंग भर लाई। मौसी-मौसा ने घर पर शादी की बात कर दोनों को मिलाया। दोनों के बीच हुई इस बातचीत में एक-दूजे का सहारा बनने की तो ठानी पर दिव्यांगता व गरीबी सपनों को आकार लेने में बाधा बनती जा रही थी। अब सामूहिक विवाह में एक डोर में बंधेंगे।

सोना के गले में दिनेश की वरमाला

निर्धनता और शारीरिक असक्षमता से परेशान मैनपुरी यूपी की सोना की 7 साल पहले संस्थान में बाए पांव की सफल शल्य चिकित्सा हुई। जिसके बाद वह केलीपर व बैशाखी के सहारे चलने लगी। संस्थान के टेलेन्ट शो में अपनी सेवाएं देकर परिवार की मदद करने वाली सोना 28 वर्ष की है, शादी नहीं होने से काफी दु:खी थी। कुछ समय पहले परिवार वालों ने मैनपुरी के ही दिनेश से रिश्ता तय किया। लेकिन दोनों परिवार अपनी कमजोर आर्थिक स्थिति के चलते विवाह नहीं कर पा रहे थे। संस्थान के सामूहिक विवाह में नि:शुल्क शादी का पंजीयन होने से दोनों आवेदक और परिवार बहुत खुश हैं।

शादी की डोर में बंधेंगे राजेश-गीता

सामरेट (ऋषभदेव) के राजेश मीणा 3 भाई-बहिनों में सबसे बड़े है। माता -पिता खेती-बाड़ी कर पालन -पोषण कर रहे हैं। घर की खराब माली हालत के कारण पढ़ाई छोड़नी पड़ी। अब अहमदाबाद में दिहाड़ी मजदूरी कर बूढ़े माँ-बाप की मदद कर रहा है। वहीं सुवेरी (खेरवाड़ा) की रहने वाली गीता कुमारी निर्धनता के कारण मनरेगा में काम कर माँ का हाथ बटा रही है। दोनों का मिलन एक प्रोग्राम में हुआ, आपस में बात करते हुए पहली ही मुलाकात में दोनों ने एक-दूसरे को पसन्द कर लिया। घरवालों से शादी की बात कर 5 माह पहले रिश्ता पक्का कर लिया। अब संस्थान के नि:शुल्क निर्धन सामूहिक विवाह में शादी की डोर में बंधेंगे।

वंदना और प्रवीण की आशा होगी पूरी

बिगड़ी गाड़ियां बनाते-बनाते जब अपनी जिन्दगी को बनाने की बात आयी तो मित्र राहुल की मदद से प्रवीण और वन्दना का बस गया घर। कॉलेज के एक कार्यक्रम में वन्दना की मुलाकात प्रवीण से हुई। इस मुलाकात ने एक दूसरे के नजदीक आने और जानने की इच्छा ने पुन: मिलने पर विवश कर दिया। मुलाकातों का दौर चलता रहा और एक दिन दोनों ने जीवन भर साथ निभाने का वादा एक दूसरे से कर लिया। गरीब माँ-बाप का ख्याल रखते हुई दोनों ने अपने घरवालों से रिश्ते की बात करी। विवाह की स्वीकृति तो मिल गई परन्तु दोनों परिवारों की निर्धनता के चलते शादी नहीं हो पाई । अब दोनों की शादी नारायण सेवा संस्थान द्वारा 26 फरवरी को करवाई जा रही है। आप भी विवाह में पधारकर अपना आशीर्वाद अवश्य देवें।

बचपन का प्यार शादी में बदलेगा

यह कहानी है सन्दीप और आशा की दोनों एक ही गांव खोड़न, (बांसवाड़ा) के रहने वाले हैं । बचपन से ही साथ खेले, साथ पढ़ते हुए दोनों ने हम सफर बन साथ जीने मरने की कसमें खाई। घरवालों को शादी की बात कर रिश्ता पक्का कर लिया। परन्तु निर्धनता सपनों को आकार लेने में बाधा बन रही थी।

सन्दीप घर की खराब माली हालत के चलते 3 साल पहले पढ़ाई छोड़ इंदौर में खाना बनाने का काम कर रहा है। तो वहीं आशा भी ऐसी ही हालातों में संघर्ष कर रही है। वह भी इंदौर में मामा-मामी के यहां रहकर आस- पड़ोस के घरों में झाड़ू-पोछा करती है। दोनों के परिवारों की आर्थिक स्थिति कमजोर है। अब दोनों संस्थान की मदद से अपना घर बसाने जा रहे हैं।

मुकेश की सहचरी बनेगी लता

पिता की अहमियत तब पता चलती है जब उसका साया सर से उठ जाये। खोडन, बांसवाड़ा के मुकेश और लता की सगाई 2 साल पहले हुई थी। सभी शादी को लेकर बहुत उत्साहित थे, तभी पिता की आकस्मिक मौत ने सारी खुशियां छीन लीं। परिवार का बड़ा बेटा होने के नाते सारी जिम्मेदारियां मुकेश पर आ गयीं । पिछले 2 साल से मेहनत कर परिवार को चला रहा है परन्तु शादी के लिए पर्याप्त सुविधाएं न होने के कारण लता से शादी नहीं कर पाया । लता भी पिता की मौत के बाद मनरेगा में दिहाड़ी मजदूरी कर माँ और भाई को सहारा दे रही हैं। अब नारायण सेवा संस्थान के माध्यम से 2 साल पहले रहा शादी का अधूरा सपना पूरा होने जा रहा है।

मजदूर माता-पिता की मिटेगी चिंता

कोटड़ा के छोटे से धोजमजी गांव की फरीदा पुत्री भीखा अपने 11 भाई-बहिनों में सबसे बड़ी है। पिता खेती में मजदूरी कर जैसे -तैसे इतनी बड़ी गृहस्थी चला रहे हैं । इस बड़े परिवार की जिम्मेदारी ओर बेटी की शादी पिता को चेन की नींद नहीं दे पा रही थी। ऐसे ही हालातों से झूझने वाले मामेर निवासी सुरेश पुत्र करमा का भी जीवन रहा। जो बचपन मे छोटी सी चोट के कारण दांए पैर के घुटने से दिव्यांग है। घर वालों ने एक-दूसरे को विवाह हेतु मिलाया इनकी व माता पिता की रजामंदी से 4 माह पहले सगाई हुई पर दोनों परिवारों की आर्थिक स्थिति के कमजोर होने से विवाह नहीं हो पाया। अब दोनों संस्थान की मदद से अपनी गृहस्थी बसाने जा रहे हैं।

साथ में कमाने वाले जीयेंगे साथ

कहते हैं घर को वास्तविक रूप में औरत ही बनाती है। जीवन भर साथ निभाने का वादा कर चुके सोहन के सूने जीवन को रोशन एवं घर को घर बनाने में दीवानी का मिला साथ।

सोहन ओर दीवानी दोनों ही गांव कोटड़ा के रहने वाले हैं। दोनों के माता-पिता खेती और दिहाड़ी मजदूरी कर जीवन चला रहे है। गरीबी के चलते पढ़ाई-लिखाई तो दूर की बात है, ठीक से गुजारा भी नहीं हो पा रहा। सोहन वेलदारी तो दीवानी नरेगा में मजदूरी कर घर चलाने में माता-पिता की मदद कर रहे हैं। घरवालों की सहमति से सगाई तो हो गई परन्तु गरीबी के कारण शादी नहीं कर पाए। संस्थान के नि:शुल्क 39वें सामूहिक विवाह से इन्हें आस जगी। अब संस्थान की मदद से दोनों अपनी गृहस्थी की गाड़ी को आगे बढ़ाएंगे।

नारायण ने सुनी दोनों परिवारों की

ऋषभदेव निवासी प्रमोद पुत्र वालाराम ओर डेलवास, उदयपुर की सीता पुत्री काना मीणा दोनों निर्धन परिवार से हैं। दोनों परिवार खेती पर ही निर्भर हैं, खेती में गेहूँ, मक्का, सरसों आदि से घर का खर्च चलाते हैं। वहीं प्रमोद पालोदा की माइंस में लिपिक का काम करता है। घरवालों ने 4 साल पहले दोनों का रिश्ता तय कर लिया। पर घर खर्चों व आवश्यकताओं के चलते परिवार ऊपर उठ नहीं पाया। दोनों परिवार चाहकर भी बेटे-बेटी का घर नहीं बसा पा रहे थे। कई साहूकारों के पास ऋण के लिये गये लेकिन कर्ज नहीं मिल सका। ऐसे में ईश्वर कृपा से इन्हें नारायण सेवा की जानकारी मिली। अब संस्थान की सहायता से 26 फरवरी को सामूहिक विवाह समारोह में दोनों परिणय सूत्र में बंधेंगे।

बिन पिता के दुल्हन बनेगी गंगा

आदिवासी बहुल झाड़ोल क्षेत्र के गरणवास गांव की गंगा पुत्री स्व-कावाराम बताती है कि पिता बीमार थे। पैसा नही होने के कारण ठीक समय पर उपचार नही हो पाया जिससे उनकी मौत हो गई। पापा थे तब तक सब कुछ ठीक चल रहा था, अब 4 भाई-बहनों व माता का गुजारा भाई टैक्सी चलाकर व होटल में काम कर चला रहे हैं ।

वहीं बंशीलाल पुत्र प्रकाश भगोरा आमलिया, झाड़ोल से हैं । घर की खराब आर्थिक स्थिति को देख 10वीं तक पढ़ाई कर 4 साल पहले पढ़ाई छोड़नी पड़ी। अभी अहमदाबाद में शटरिंग (मकान की छत भरने का काम) कर घर खर्च में सहयोग कर रहा है। तो माता-पिता खेती कर गुजारा चलाते हैं। दोनों एक दूसरे को पहले से जानते व पसन्द करते हैं। आपस में फोन पर बातचीत करते हुए, घरवालों से शादी हेतु सहमति बना सगाई कर ली। अब संस्थान के सहयोग से दोनों सामूहिक विवाह में वैवाहिक संबंधों में बंधने जा रहे हैं।

दो प्रेमियों का परिणय बंधन

रॉयल कुमार (ऋषभदेव) और दुर्गा कुमारी (बलून करछा, उदयपुर) के रहने वाले हैं। दोनों की प्रेम कहानी बिलकुल वैसी ही है, जैसी फिल्मों में होती है। परिवार की एक शादी में दोनों की मुलाकात हुई। यह मुलाकात असल में दो दिलों के जुड़ाव की दस्तक थी। एक-दो महीनों की बातचीत के बाद दोनों के बीच नजदीकियां इतनी गहरी हो गई की रॉयल हिम्मत जुटाकर अकेला ही शादी की बात करने दुर्गा के घर चला गया। दोनों ने एक-दूजे से ताउम्र साथ निभाने का वादा कर लिया, परन्तु घरवाले दोनों की शादी को लेकर तैयार नहीं थे। आखिर सच्चा प्यार रंग लाया। 5-6 माह के बाद दोनों ने घर वालों को मना लिया। पिता की मौत के बाद रॉयल अहमदाबाद में होटल पर काम कर माता व छोटे भाई का गुजारा कर रहा है तो दुर्गा के माता-पिता दिहाड़ी मजदूरी कर पांच सदस्यों का पोषण कर रहे हैं। ऐसे में दोनों के विवाह की कल्पना करना किसी स्वप्न जैसा ही था। लेकिन यह स्वप्न साकार होने जा रहा है, संस्थान के सहयोग से।

परेशानी खत्म, बंधेंगे एक सूत्र में

39वें निर्धन सामूहिक विवाह में भाग ले रहे पिंकाराम पुत्र नाणिया मामेर (कोटड़ा) का रहने वाला है। माता-पिता 7 भाई-बहिनों का पेट खेती कर भर रहे हैं तो पिंकाराम गुजरात में कपास के खेतों में काम कर बुजुर्ग माता-पिता को सहारा दे रहा है। मुजुला पुत्री अर्जुन भाई खेड़ब्रह्मा तालुका (गुजरात) से हैं। इनके पिता भी खेती और आस -पास मजदूरी कर परिवार का गुजारा चला रहे है। दोनों परिवारों की आर्थिक स्थिति बेहद कमजोर है। गुजरात में काम करते हुए आपस में हुई जान पहचान से परिजनों ने दोनों का मिलन करा सगाई करवाई। परंतु निर्धनता शादी में आड़े आ रही थी। संस्थान के सामूहिक विवाह से इन्हें आशा जगी। संस्थान की मदद से 26 फरवरी को दोनों एक प्राण होने जा रहे हैं।

पिता का साया उठा, मां का आंचल रूठा

घर की एकलौती बेटी को जिस उम्र में प्यार और दुलार मिलना चाहिए था उस उम्र में दुखों का पहाड़ ढोना पड़ा। छोटी उम्र में सिर से पिता का साया तो उठा ही, साथ ही मां का आँचल भी छूट गया। मां उसे छोड़ दूसरे के घर नाते चली गई। जिससे मासूम का रो-रो के बुरा हाल था। तभी देवी माँ के रूप में मौसी ने सहारा दे पाला -पोसा। माता के रूप में मौसी का आशीर्वाद उसे फल गया और नवरात्री में माता की चौकी के दौरान मोवनी की मुलाकात खेताराम से हुई। मानों यह मुलाकात देवी माँ ने ही करवाई हो। खेताराम और मोवनी ने पहली मुलाकात में ही एक-दूसरे को पसंद कर एक साथ जीवन बिताने का फैसला कर लिया। खेताराम सिरोही और पिंडवारा में मजदूरी कर अपने परिवार को पाल रहा है। मोवनी 25-26 फरवरी को संस्थान द्वारा आयोजित निःशुल्क सामूहिक विवाह में सात फेरे लेकर खेताराम के परिवार में जुड़ने जा रही है।

दोनों ने एक-दूसरे की कमी समझी - होंगे एक

एक हाथ से तो दूसरा पैर से दिव्यांग है, परन्तु जीवन मे कभी हार नहीं मानी। अपने हौसलों को बुलन्द कर दोनों ने जैसे-तैसे बी.ए. तक की पढ़ाई की। केसरी नन्दन शर्मा जो कि टोड़ा भीम, करौली के रहने वाले हैं। 6 साल की उम्र से कमर एवं बांए पांव से दिव्यांग हैं। 26 वर्ष से लाठी के सहारे घर से चलकर अहमदाबाद में पान का गल्ला चला गुजारा करते हैं । वहीं झारखंड निवासी उर्मिला का भी जीवन ऐसा ही रहा। 4 माह की थी तब बुखार आया उसके बाद से ही बांए हाथ की नस में रक्तका संचार कम होने से हाथ पतला व कमजोर हो गया।

भाई और चाचा ने दोनों का मिलन करा 3 माह पहले सगाई तो करवा दी परंतु दोनों के पिता की मौत के बाद घर के हालात ऐसे नहीं रहे कि वे शादी के बंधन में बंध पाएं। मां आस-पड़ोस के घरों में झाड़ू-पोछा और बर्तन धो कर गुजारा कर रही है। ऐसे में कौन एवं कैसे करवाएं शादी ? कहीं से कोई आस नही ? लेकिन ईश्वर ने उनकी सुनी। दोस्तों से नारायण सेवा संस्थान के नि:शुल्क दिव्यांग एवं निर्धन सामुहिक विवाह की जानकारी मिली तो उम्मीद जगी। अब संस्थान के सहयोग से इनके बिखरे सपनों को लगेंगे पंख।

ज्योति बनेंगी सुमित की हमराह

शादी के मेल यदि सच्चे इश्क के हों तो कुछ भी असंभव नहीं होता है। (म.प्र) इंदौर निवासी सुमित जरिया और माली मोहल्ला की ज्योति बोनिया के साथ कुछ ऐसा ही हुआ। एकलौती बेटी को माता-पिता ने बड़े लाड़ प्यार से पाला परंतु माता-पिता की मौत के बाद वह अनाथ हो गई। वह थे तब तक सब कुछ उसका अपना सा था उनके जाते ही जिंदगी की राह में अंधेरा छा गया। अब सिलाई कर भैया और भाभी के साथ जीवन बिता रही हूँ।

भैया लिपाई-पोताई का काम कर रहे थे कि तभी राजेश जरिया से मुलाकात हुई, वह भी यही काम करते हैं। दोनों की यह मुलाकात दोस्ती में बदल गई । घर आने जाने से सुमित ओर ज्योति भी एक दूसरे को पसंद करने लगे और कुछ ही महीनों में दोस्ती प्यार में बदल गई। दोनों परिवार सगाई कर विवाह के लिए रात-दिन पैसे जुटाने में लग गए परन्तु घर की जरूरतों और बीमारियों के खर्च तले दबते चले गए। किसी रिश्तेदार से सूचना मिली कि नारायण सेवा निर्धन परिवारों का निःशुल्क विवाह कराती है । तब उदास चेहरों पर मुस्कान आई और संस्थान से संपर्क कर रजिस्ट्रेशन करवाया।

मेले की मुलाकात-पहुंची शादी तक

आदिवासी परम्परा के अनुसार मेले में लड़का-लड़की एक-दूजे को पसंद कर अपना घर बसाते हैं। वैसे ही देवीलाल (कोटड़ा) और जामी कुमारी (सायरा) ने भी सायरा पंचायत के रावछ गांव में 5 माह पहले लगे मेले में एक-दूसरे को पसंद कर अपनी गृहस्थी बसाने की शपथ ली। दोनों ने अपने घरवालों से सगाई की बात की। जिन्होंने हामी भरते हुए कहा कि खेती और दिहाड़ी मजदूरी से बमुश्किल घर चलता है। शादी हेतु कहां से इतने पैसे लाएं? काम पर जाते हैं कभी काम मिलता है तो कभी नहीं ? तो ऐसे में कैसे तुम्हारा विवाह करवाएं ? ईश्वर सबकी सुनता है उन्हें कहीं से नारायण सेवा संस्थान के सामूहिक विवाह का पता चला। संस्थान में पंजीयन कराया अब दोनों की शादी का सपना पूरा होने जा रहा है ।

सात फेरे ले बनेगे एक-दूजे का सहारा

प्रवीण पालोदा और प्रियंका उम्बाड़ा, (बांसवाड़ा) के निवासी हैं । उच्च शिक्षा की चाह रखते हुए भी इन्हे खराब आर्थिक स्थिति के कारण पढ़ाई छोड़नी पड़ी।

परिवार की निर्धनता और सबसे बड़े बेटे होने की जिम्मेदारी ने प्रवीण की पढ़ाई दसवीं के बाद ही छुड़वा दी। मार्बल गैंगसा पर काम कर घर की जरूरतों को पूरा कर रहा है। तो वहीं प्रियंका के पिता छगन लाल अहमदाबाद में टाईल्स का काम कर परिवार के 6 सदस्यों का गुजर -बसर कर रहे हैं। प्रवीण बताते हैं की ऐसे में पढ़ाई तो अधूरी रह गयी पर अच्छे जीवन साथी की तलाश प्रियंका के साथ पूरी हुई। घरवालों की सहमति से 4 माह पूर्व सगाई हो गई पर शादी के लिए पर्याप्त धन न होने से दोनों परिवार परेशान थे। अब संस्थान के तत्वावधान में सात फेरे ले अपना घर बसाएंगे।

बिन पिता की बेटी कविता का हाथ थामेगा विनोद

बाँसवाड़ा औड़ा बस्ती, गढ़ी तहसील में रहने वाली कविता अहारी बताती है कि पिता की मौत ने पूरे परिवार को तोड़ दिया। आर्थिक संकटों से घिरे 6 भाई-बहिनों को माता मनरेगा में और भाई होटल में काम कर पाल रहे हैं। जैसे-तैसे कर 10वीं की पढ़ाई की पर निर्धनता के कारण आगे की पढ़ाई छोड़नी पड़ी। माता यहीं सोच दुःखी रहती की कौन गरीब घर की बेटी का हाथ थामेगा?

फिर इसी तहसील के खोड़न गांव निवासी विनोद परपोटा पुत्र धुला जो चुनौतीपूर्ण जीवन बिता रहा था। पिता खेती कर 7 सदस्यों का पोषण कर रहे हैं । दोनों की स्थिति देख रिश्तेदार ने सगाई करवाई, पर अब दोनों परिवारों की चिंता बढ़ गई शादी करवाने को लेकर बुरा हाल था। फिर संस्थान के साथी द्वारा सामूहिक विवाह की जानकारी मिली। उन्होंने पंजीयन करवाया । अब दोनों 39वें सामूहिक विवाह में एक होने जा रहे हैं ।

चुनौतियों को मात देने का संकल्प

आदिवासी अंचल में लगने वाले पारंपरिक मेले जीवन साथी की खोज को भी अंजाम तक पहुंचाने में काफी मददगार होते हैं। ऐसे ही हम मेले में उदयपुर जिले के कोटड़ा उपखण्ड के राजपुरा गांव में रहने वाले राजेन्द्र (26) व कोटड़ा की गुजरात से जुड़ता सीमा के साबरकांठा की निवासी रजका बेन गमार की मुलाकात हुई। जो कुछ ही अर्से बाद शादी के मुकाम तक जा पहुंची लेकिन गरीबी के चलते दो शरीर एक प्राण बनने में विलम्ब को नारायण सेवा संस्थान 25-26 फरवरी को सामूहिक विवाह में समाप्त कर दोनों के पीले हाथ करने का माध्यम बनने जा रहा है।

इस जोड़े में रजका बेन सकलांग है, जब कि राजेन्द्र दोनों पांवों से दिव्यांग है और बैठकर हाथों की ताकत पर आगे बढ़ना उनकी विवशता है, लेकिन 12वीं तक शिक्षा को उन्होंने अपनी ताकत बनाया है। सकलांग रजका बेन के हौसंले और विचारों की सराहना की जानी चाहिए कि उन्होंने एक दिव्यांग को जीवन साथी चुन कर चुनौतियों को मात देने का संकल्प किया।

सात जन्म के साथी बनेंगे नानी और दिनेश

प्रतापगढ़ के धामण डूंगरी निवासी दिनेश पुत्र बाबुलाल और खरोट गांव की नानी पुत्री तेजाराम दोनों निर्धन परिवार से हैं। दोनों के परिजन खेती- बाड़ी कर अपने बड़े परिवार का गुजारा भी मुश्किल से चला पाते हैं। रिश्तेदार ने दोनों की सगाई तो करवाई पर घर के हालात ऐसे थे की एक समय के भोजन का खर्च भी मुश्किल से हो पाता हैं, ऐसे में इनको विवाह के बंधन में बांधना घरवालों के बूते से बाहर था। तभी भुआ के लड़के ने बताया कि नारायण सेवा संस्थान निर्धन व दिव्यांगजनों का विवाह निःशुल्क में करवाता है। संस्थान में पंजीयन करवाया। अब दोनों 39वें सामूहिक विवाह में सात फेरे लेकर एक सूत्र में बंधेंगे।

चाय वाले की बेटी बनेगी विपिन की दुल्हन

बालवाड़ी, ऋषभदेव के रहने वाले विपिन (गड़िया) दिहाड़ी मजदूरी कर माता - पिता की मदद कर रहे हैं। 4 भाई बहनों में सबसे बड़े हैं। वहीं शालू के पिता चाय की थड़ी चला घर का गुजरा बड़ी मुश्किल से कर पा रहे हैं। 4 माह पहले दोनों के परिवार वालों ने एक दूसरे को मिलवाया। गरीबी एवं घर के बढ़ते खर्चों के कारण विवाह नहीं करा पाए। इसी दौरान संस्थान के साधक द्वारा नि:शुल्क सामूहिक विवाह की सूचना पर दोनों ने पंजीयन करवाया। अब ये हम सफर बनने जा रहे हैं।

संस्थान के सहयोग से अब होगा विवाह

खेरवाड़ा के छोटे से गांव कारछा कंला निवासी सोहन पुत्र जगदीश गड़िया काम-काज व पिता वेलदारी करते हैं। माता की आये दिन तबियत खराब रहती है। स्थिति ऐसी है कि रोज कमाना ओर रोज राशन लाना पड़ता है। जब कभी काम नहीं मिलता तो भूखा ही सोना पड़ता है। इसी स्थिति से निकिता व उसका परिवार भी जीवन यापन कर रहे हैं । दिहाड़ी काम कर 7 जनों का माता-पिता पेट बड़ी मुश्किल से भरते हैं। दोनों का रिश्ता घरवालों ने 3 महीने पहले कर तो दिया पर निर्धनता बीच में पहाड़ बन खड़ी थी। कैसे विवाह करते ? फिर कहीं से संस्थान के सेवादूतों से मिली नि:शुल्क सामूहिक विवाह की बात बताई जो उदास -हताश जीवन को खुशियों से भर दिया। उन्होंने रजिस्ट्रेशन करवाया, अब संस्थान के तत्वावधान में आयोजित विवाह समारोह में हम कदम बन जीवनभर साथ निभाएंगे।

बिखरे सपने अब संवरेंगे

गुजरात, वागड़ गांव के 24 वर्षीय हितेश कुमार और बांसवाड़ा जिला गांगड़तलाई तहसील के खुटाणलिय की सारा मचार दोनों ही निर्धन परिवार से हैं। इनके माता-पिता खेती एवं दिहाड़ी मजदूरी कर जैसे-तैसे गुजारा चला रहे हैं। घरवालों की सहमति से दोनों का रिश्ता तो हो गया पर घर के खराब हालातों के चलते विवाह नहीं हो पाया। इसी बीच हितेश को दोस्तों से नारायण सेवा संस्थान के 39वें नि:शुल्क निर्धन सामूहिक विवाह की जानकारी मिली जो उसके बिखरे सपनों को जोड़ने में सार्थक सिद्ध होने जा रही है। अब संस्थान की मदद से दोनों पवित्र अग्नि के साथ फेरे ले वैवाहिक जीवन में बंधेंगे।

अरूणा के वर होंगे गणेश

ऋषभदेव निवासी गणेश मीणा और खेरवाड़ा की अरुणा दोनों ही निर्धन परिवार से हैं। माता-पिता दिहाड़ी मजदूरी कर परिवार का भरण-पोषण भी बड़ी मुश्किल से कर रहे हैं। घर में आये दिन किसी ने किसी की बीमारी के चलते आर्थिक तंगी से जूझ रहे हैं। दोनों की सगाई तो करवा दी परंतु इतने पैसे नहीं थे कि शादी कर पाएं। संस्थान के सेवा कार्यों की जानकारी पहले से थी। संस्थान में संपर्क कर मदद मांगी। अब संस्थान के सहयोग से दोनों नि:शुल्क सामूहिक विवाह में सात फेरे ले एक होंगे।

संस्थान के सहयोग से नए जीवन मे प्रवेश

उदयपुर, गड़ावत निवासी धनपाल मीणा दिहाड़ी मजदूरी कर परिवार के 5 जनों का गुजारा चला रहे हैं, तो वहीं आदिवासी बहुल क्षेत्र की संगीता माता-पिता के साथ खेती में काम कर अपना जीवन गुजार रही है। परिवार की कमजोर स्थिति और पैसों की तंगी के कारण दोनों को अपनी पढ़ाई छोड़नी पड़ी। रिश्तेदार ने दोनों को मिला, घरवालों की सहमति से सगाई करवाई। दोनों परिवारों ने शादी की तैयारी में रात -दिन एक कर दिया पर घर खर्चों के आगे विवाह नहीं करवा पाए। अब संस्थान के नि:शुल्क निर्धन सामूहिक विवाह में दोनों अपने नए जीवन की शुरूआत करने जा रहे हैं।

ऊपर वाले ने बनाई जोड़ी

गरीब परिवार में जन्मी पारी कुमारी 5 भाई-बहिनों में सबसे बड़ी है। पिता कुरीलाल छोटी सी जोत पर खेती कर परिवार को पाल रहे हैं । गरीबी के चलते पढ़ाई भी छूट गई। अभावों में जीवन गुजारते हुए माता -पिता को बच्चों के खाने-पीने के साथ ही बेटी के विवाह की चिंता खाये जा रही थी ।

ऐसी ही परिस्थितियों से जीवन जी रहा था ऋषभदेव तहसील परेज गांव के भुरीलाल का परिवार। परिवार के 5 सदस्यों का वह वेलदारी कर गुजारा कर तो रहा था पर अन्य जिम्मेदारियों के बोझ से उभर नही पा रहा था। उसके पुत्र सूरज व पारी की सगाई तो 8 माह पूर्व कर दी परन्तु निर्धनता विवाह में बाधक बनी थी। कहाँ से लाए इतना पैसा ? पर कहते हैं ना कि जोड़ियां तो ऊपर वाला बनाता है हम तो सिर्फ उनको मिलाने का काम करते हैं। ऐसा ही होने जा रहा है, संस्थान की मदद से दोनों अब 25-26 फरवरी को सामूहिक विवाह में सात फेरों के साथ जन्म-जन्म के साथी बनेंगे।

रिश्तेदारी में बदली दोस्ती

यह कहानी छलरिया खेड़ी, (प्रतापगढ़) में रहने वाले दो दोस्तों नन्दलाल और खालु मीणा की है। दोनों अपने बच्चों की शादी को लेकर परेशान थे,कि शादी कहां-कैसे और किसके साथ करवाएं। यह सोच दोनों ने आपस में बातचीत कर फैसला किया कि क्यों ना अपनी इस दोस्ती को रिश्तेदारी में बदला जाए। घर पर बात कर अनिल और आशा को मिलाया फिर सब की रजामंदी से रिश्ता तय कर दिया। नन्दलाल किसानी कर 6 सदस्यों का तो खालु मीणा गड़िया मजदूरी कर 9 जनों का पेट बड़ी मुश्किल से भर रहे हैं । दोनों परिवार में निर्धनता के चलते विवाह कराने की बहुत कोशिशें की परन्तु नाकाम ही रहे। फिर इन्हें दोस्तों से संस्थान के नि:शुल्क निर्धन सामूहिक विवाह की सूचना मिली जो दोनों परिवारों के अधूरे सपनों को जोड़ने में सार्थक सिद्ध हुई। अब अनिल और आशा 26 फरवरी को अपना घर बसा जीवन सुगम बनाएंगे।

हालात सुधारने उर्मिला और दिनेश होंगे एक

हार्टअटैक से एक साल पूर्व पिता की मौत से परिवार टूट गया था। 4 भाई-बहिनों का भरण पोषण करने वाले पिता के जाने से घर की सारी जिम्मेदारियां बड़े बेटे पर आ गई। इस कारण पढ़ाई छोड़ दिनेश गुजरात में कपास के खेतों में मजदूरी व मालगाड़ियों में सामान लदान कर परिवार का पेट भर रहा है। वहीं कोटड़ा की उर्मिला पुत्री मणिलाल निर्धन भी परिवार से है। इनका भी गुजारा खेती से ही चलता है। 3 महीने पहले ही रिश्तेदार के माध्यम से दोनों का रिश्ता तय हुआ। दोनों परिवारों को संस्थान के नि:शुल्क विवाह की जानकारी मिली तो सम्बल मिला। अब दोनों पवित्र अग्नि के सात फेरे ले 26 फरवरी को शादी के पवित्र बंधन में बंधने जा रहे हैं।

तिजु की झोली में खुशियां भरेगा भगवान

प्रतापगढ़ जिले की चाचोड़ा तहसील के रतनपुरिया निवासी भगवान दास क्रेशर मशीन चलाकर बूढ़े माता - पिता का सहयोग कर रहा था कि 3 साल पहले हुए हादसे ने इनके सीधे हाथ की कलाई छीन ली। एक हाथ से दिव्यांग होने से काफी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। क्योंकि घर में एक मात्र कमाने वाला था। बूढ़े मां-बाप को बेटे की शादी की चिंता सोने नहीं दे रही थी। परन्तु उपरवाले ने सब के लिए किसी न किसी को चुन रखा है। निकट के एक रिश्तेदार ने जलालपुरा की तिजु कुमारी से मिलन करवा सगाई करवाई। माँ बाप ने अपनी सबसे बड़ी बेटी की शादी के अनेक सपने संजोये की बेटी को शादी में दुनिया की तमाम खुशियां देंगे। परन्तु अचानक ह्रदय गति रुकने से पिता की मृत्यु ने परिवार की खुशियों को छीन लिया। पिता ने अपनी सबसे लाड़ली बेटी की सगाई तो करवा दी पर शादी कर कन्यादान का धर्म नहीं निभा पाए। परिवार की जिम्मेदारी आने से तिजु नरेगा योजना में मजदूरी कर रही है। घर-परिवार के हालात नहीं होने के कारण शादी नहीं कर पाए। संस्थान से मदद की गुहार लगाई। अब दोनों संस्थान द्वारा आयोजित नि:शुल्क निर्धन सामूहिक में दो शरीर एक प्राण होंगे।

दोनों बनेंगे एक-दूजे का सहारा

प्रतापगढ़ जिले की धरियावद तहसील की बड़ी अम्बेलि निवासी लड्डुराम को बचपन में पोलियो ने जकड़ लिया। दांए पैर से दिव्यांग होने से एक हाथ पैर पर रख कर चलते हुए संघर्षपूर्ण जीवन बिता रहे हैं। स्कूल में खाना बनाने का काम कर बूढ़े माता-पिता व घर का खर्च चला रहे थे कि 2020 में कोरोना के दौरान यह काम भी छूट गया। बेरोजगारी के कारण बुरे हाल हो गए। वहीं ममता कुमारी निर्धन परिवार से है। शादी-ब्याह एवं आस-पड़ोस के घरों में बर्तन साफ करने का काम कर परिवार में सहयोग कर रही है। घरवालों ने 2 वर्ष पूर्व रिश्ता तो तय कर दिया पर निर्धनता के चलते विवाह नहीं हो पाया। इन्हें सोशल मीडिया व किसी जानकार ने संस्थान के नि:शुल्क सामूहिक विवाह की बात बताई तो उम्मीद जगी। अब ये शादी की डोर में बंधने जा रहे हैं।

शिव की प्यारी बनेंगी श्यामा

प्रतापगढ जिले की सुहागपुरा तहसील के नारदा गांव निवासी शिवलाल पुत्र बापूलाल की दशा बहुत दयनीय है। घर की खराब आर्थिक स्थिति के चलते एक समय का भोजन भी बड़ी मशक्कत के बाद जुटा पाते हैं। निर्धनता के चलते दो भाइयों को पढ़ाई छोड़ दिहाड़ी मजदूरी पर जाना पड़ा। ऐसे हालातों से गुजर रही हैं, श्यामा पुत्री नारायण लाल। उम्र अधिक होने से नारायण मजदूरी भी नही कर पाते हैं। ऐसे में 6 जन का गुजारा कैसे हो रहा है, यह वही जानते हैं। माता-पिता की सहमति से शिवलाल और श्यामा का रिश्ता तो हो गया पर निर्धनता के आड़े आने से विवाह नहीं हो पाया। अब संस्थान के तत्वावधान में आयोजित नि:शुल्क निर्धन सामूहिक विवाह सूत्र में बंधेंगे।

पुष्पा बनेंगी दिव्यांग बीबन की दुल्हनियां

गुजरात के साबरकांठा जिले में रहने वाला बीबन भाई दरांगी का जीवन बड़ा कष्ट दायक रहा। छोटी उम्र में ही सिर से माता-पिता का साया उठ जाने से दोनों भाई अनाथ हो गए । नियति का खेल यहीं नहीं रुका, बुखार ने पोलियो का दंश दे दांए पांव से घिसटने को मजबूर कर दिया। स्थिति ऐसी थी कि आस पड़ोस से खाना मांग कर गुजारा किया। अपने लायक जो काम मिले वह कर जी रहे हैं। इसी बीच पुष्पा का साथ मिला जो निर्धन परिवार से है। एक दूसरे की पसंद से दोनों ने घर बात कर शादी का फैसला कर लिया पर निर्धनता और दिव्यांगता बाधक बन खड़ी थी। संस्थान के नि:शुल्क सामूहिक विवाह की जानकारी मिली । संस्थान पंजीयन करवाया अब ये संस्थान के सहयोग से अपना वैवाहिक जीवन शुरू करने जा रहे हैं।

आशा बनेंगी दिलीप की हम सफर

प्रतापगढ़ जिले की सुहागपुरा तहसील, डांगपुरा के दिलीप मेघवाल और धरियावद निवासी आशा कुमारी दोनों ही निर्धन परिवार से हैं। दोनों के माता-पिता छोटी सी जोत पर किसानी कर घर गुजारा चला रहे हैं। माता-पिता की सहमति से दोनों की सगाई तो हो गई परन्तु आशा की मां की बीमारी के खर्च और दिलीप के बड़े परिवार एवं माली हालत के कमजोर होने से शादी के बन्धन में नहीं बंध पाए ।लेकिन अब संस्थान के 39वें नि:शुल्क सामूहिक विवाह में एक दूसरे के हम सफर बनेंगे।

लालू की होगी माया

प्रतापगढ जिले की सुहागपुरा तहसील के वीरपुर के लालूराम और डिण्डोर गांव की माया दोनों का जीवन काफी संघर्षों से भरा रहा। आर्थिक स्थिति कमजोर होते हुए भी गरीब माता-पिता ने पढ़ा लिखा कर। तक की पढ़ाई करवाई। घरवालों की सहमति से दोनों की सगाई तो करवा दी परंतु निर्धनता के कारण विवाह नहीं हो पाया। अब संस्थान के 39वें सामूहिक विवाह में दोनों परिवारों का सपना पूरा होने जा रहा है।

लम्बी प्रतीक्षा पर लगा विराम

छोटी सी जोत पर काश्तकर गुजारा करने वाले प्रकाश पुत्र अम्बालाल और लक्ष्मी पुत्री नारायण दोनों ही निर्धनता ग्रस्त परिवार से हैं। प्रकाश होटल में काम कर बूढ़े माँ-बाप को मदद कर रहा है। दोनों परिवारों की समान स्थिति को देख निकट के रिश्तेदारों ने रिश्ता करवाया पर विवाह करवाने में असमर्थ होने के कारण इनका मिलन नहीं हो पाया। लेकिन अब संस्थान के सहयोग से दोनों एक डोर में बंधने जा रहे हैं।

रेखा-रमेश, जनम-जनम के फेरे

रमेश और रेखा दोनों का मिलन एक शादी समारोह में हुआ, दोनों ने एक दूजे से इशारों-इशारों में अपने मन की बात कही। कुछ महीनों तक कभी रूबरू तो कभी फोन पर इनकी बात चलती रही। एक दिन दोनों ने परस्पर जीवनभर साथ निभाने का वादा कर लिया। दोनों के घर के हालात बहुत खराब होने से अपने वादे को पूरा नहीं कर पा रहे थे ।इन्हें संस्थान के साथी द्वारा नि:शुल्क सामूहिक विवाह के बारे में सूचना मिली जो अधूरे वादे को पूरा करने में सार्थक सिद्ध हुई ।अब दोनों एक दूसरे को जन्म-जन्म के रिश्ते में बांधने जा रहे हैं।

NARAYAN SEVA SANSTHAN

Our Religion is Humanity

हो रहा विवाह का मंगल गान,
माता-पिता बन करें कन्या दान

बेटियाँ ईश्वर का उपहार,
माता-पिता बन लुटाएं प्यार

पूर्ण कन्यादान (प्रति कन्या)

₹ 51,000

आंशिक कन्यादान (प्रति कन्या)

₹ 21,000

पाणिग्रहण संस्कार (प्रति जोड़ा)

₹ 10,000

मेहंदी रस्म (प्रति जोड़ा)

₹ 2,100

51 जोड़ों का घर-संसार बसाने में करें सहयोग

Bank Name : State Bank of India
Account Name : Narayan Seva Sansthan
Account Number : 31505501196
IFSC Code : SBIN0011406
Branch : Hiran Magri, Sector No.4, Udaipur-313001

Donate via UPI
narayanseva@sbi

अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय: 483, 'सेवाधाम' सेवा नगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर (राज.) 313002, भारत

+91 294 662 2222, | +91 7023509999